نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

م ح م د صلی اللہ علیہ وسلم
ح م د م صلی اللہ علیہ وسلم
م د م ح صلی اللہ علیہ وسلم
د م ح م صلی اللہ علیہ وسلم

स़लातुल मीमिल्अरबईन 10
दुरूदे चहल मीम

पेशकश

बमौक़ा ज़ुल हिज्जा 1437हि0
बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व ह़ज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

सुब्ह़ान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्त़ान क या मन हुवल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवल क़दीमुल मुन्इमु स़ल्लि व सल्लिम व बारिक सर्मदन अ़ला नूरिकल ह़बीबिल्लज़ी अज़्हर्त आद म व ह़व्वा अ लिविलादतिही व ज अ़ल्तस़्स़ला त वस्सलाम बैनहुमल मह र व शहित्त बिही व शहिदत मलाइकतु क फ़हुवन्नूरु जा अ मिन आ द म व हाबी ल व शी स व महलाई ल व नूह़िन इला इब्राही म व बअ़दहू इस्माई़ ल नसलन बअ़ द नस्लिवँ व अक़्म्त इब्राही म व इस्माई़ ल बिमक्क त व अमर्त हुमा अंय्यब्निया बैतकश्शरी फ़ बिहा लितकू न मौलि द ह़बीबि क फ़ यद ज़वानि ल क फ़कुल्त फ़िल्क़ुर्आनि रब्बना वब्अ़स फ़ीहिम रसूलम्मिन्हुम यत्लू अ़लैहिम आयाति क वयुअ़ल्लिमु हुमुल किता ब वल ह़िक्म त व युज़क्कीहिम इन्न क अन्तल अ़ज़ीज़ुल्ह़कीमु व नूरिकल्लज़ी जअ़ल्त वालिदैहि अत़्य बल वालिदी न व आलहू अत़्य बल आलि व अस़्ह़ाबहू अत़्य बल अस़्ह़ाबि व उम्म तहू अत़्य बल उममि व हु व नूरुकल क़दीमुल मुन्इमु मोह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस़्ह़ाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सिवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ वह जो अल्लाह है नहीं कोई मअ़बूद सिवाए उस के जो क़दीमी ज़ात वाला इन्अ़ाम वाला है तू भेज ख़ूब ख़ूब सरमदी दुरूदो सलाम और बरकत अपने उस नूरे ह़बीब पर कि जिनकी विलादत के लिए तूने आदम व ह़व्वा को ज़ाहिर फ़रमाया और उनका महर तूने दुरूदो सलाम रखा जिस पर तू और तेरे फ़रिशते गवाह हुए पस वह नूर आदम व हाबील, शीस व महलाईल और नूह़ के पास से होकर इब्राहीम और उनके बअ़द इस्माईल के पास नस्लन बअ़द नस्लिन होते हुए आया और तूने इब्राहीम व इस्माईल को मक्का मुकर्रमा में मुक़ीम फ़रमाया और उन्हें वहाँ अपने शराफ़त वाले घर की तअ़मीर का हुक्म फ़रमाया ताकि वह तेरे ह़बीब की जाए पैदाइश क़रार पाए चुनान्चे वह दोनों ह़ज़रात तेरी बारगाह में दुआ़ फ़रमाते थे जैसा कि तूने क़ुर्आन में फ़रमाया ऐ हमारे पालनहार तू भेज इनमें एक रसूल इन्हीं में से ताकि वह इन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और इन्हें तेरी किताब व हिक्मत सिखाए और इन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमादे बेशक तूही ग़ालिब ह़िक्मत वाला है और अपने उस नूर पर कि बनाया तूने जिन के वालिदैन को तमाम वालिदैन में सबसे ज़्यादा पाकीज़ा और उन की आल को तमाम आल में सबसे ज़्यादा पाकीज़ा और उन के अस़्ह़ाब को तमाम अस़्ह़ाब में सबसे ज़्यादा पाकीज़ा और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों में सबसे ज़्यादा पाकीज़ा और वह तेरे क़दीमी इन्अ़ाम फ़रमाने वाले नूरे ह़बीब मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और आप ﷺ के वालिदैन पर, आप ﷺ की आल पर आप ﷺ की अहले बैत पर और आप ﷺ के अस़्ह़ाब पर हर नई शान के साथ हमेश्गी त़ौर पर।

नोट: जो शख़्स़ इस दुरूद को रोज़ाना ४०/७/३ बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा वह दाइमी क़दीमी नेअ़मते इलाहिया से माला माल होगा और उस की हर दुआ़ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।